Support to Regional Aquatic Resources Management

DFID NRSP Research Project R8100
Investigating Improved Policy on Aquaculture Service Provision to Poor People
March 2002 – May 2003

Mahajal – The Big Fishing Net

A Street-play Performed at the Policy Review Workshop
Noida, Delhi
24-25 April 2003

In Association With
Gramin Vikas Trust (GVT)

Investigating Improved Policy on Aquaculture Service Provision to Poor People

Mahajal – The Big Fishing Net
A Street-play Performed at the Policy Review Workshop
Noida, Delhi
24-25 April 2003

In Association with
Gramin Vikas Trust (GVT)

DFID NRSP Research Project R8100
March 2002 – May 2003

Rakesh Raman

Contents

The Street-play and Theatre Troupe 1

Hindi Script 5

English Script 21

The Street-play and Theatre Troupe

Mahajal – The Big Fishing Net was written by Mr Rakesh Raman, a playwright from Ranchi, Jharkhand, and performed by his theatre troupe on three occasions:

> On 19 and 20 April 2003 in two of the villages of the street-play's inspiration in Ranchi – Fulwar Toli in Bundu Block and Chhota Changru in Silli Block, and
> On 24 and 25 April at the Policy Review Workshop held in Noida, Delhi.

The street-play was written as an interpretation of the collective outcomes of the six project Case Studies carried out in Jharkhand, Orissa and West Bengal – with the six texts, four PowerPoint presentations and three CD-ROM film documentaries as the playwright's source material.[1]

Act One sets the scene of fisherfolk's livelihoods and the difficulties they face in a tribal village. Act Two places the project's policy change recommendations within the context of the characters' lives and aspirations.

Before *Mahajal's* performance in Noida, Delhi, the theatre troupe traveled on two days to Fulwar Toli and Chhota Changru, where Act One was performed and the respective Case Study film documentaries – "A Proactive Village" and "A Progressive Farmer" – were also screened using a lap-top, projector and generator. During the Policy Review Workshop, Act One was performed at the conclusion of the first day, and Act Two in the middle of the second day.[2]

The members of the theatre troupe included:

Mr Rakesh Raman	Director and Technical Officer
Ms Meena Raman	Production Manager
Mr Shankar Oraon	Nat (Male Narrator)
Ms Rankita Raman	Nati (Female Narrator)
Mr Kisan Prasad	Baba (Old Man)
Mr Rajendra Mirdha	Machhua
Ms Gauri Das	Sugni
Mr Ramesh Kumar	Raghua
Mr Ashok Kumar	Nandu
Mr Pawan Kesri	Tena
Mr Mayank Raman	Jitu
Mr Parmeshwar Sahu	Kaku
Ms Nira Oraon	Machali Rani (Queen Fish)
Mr Manish Kumar	District Officer
Mr Chotu Panda	Drumist and Singer

[1] These materials are available in the "Case Studies" publication and on the project CD-ROM.
[2] The proceedings are documented in the "Policy Review Workshop" report, also on the CD-ROM.

Fulwar Toli, Bundu, Jharkhand

Chhota Changru, Silli, Jharkhand

Policy Review Workshop, Noida, Delhi

Hindi Script

महाजाल

(मछुआरों के जीवन पर एक लघु नाटक)

नटी मछली का टोकरा सिर में ढोये होने का अभिनय करती हुई प्रवेश करती है और चारों ओर घूमती है, नट उसे आश्चर्य से देखता हुआ पूर्णरूपेण अतिनाटकीय प्रतिक्रिया करता है...

नटी : मच्छी[[ले लो..... मच्छी[[[ले लो.....

नट : ;हाव भाव बनाता, मुह बिदकाताद्ध मच्छी !!... छि !

एक कोने से आरम्भ होकर यह क्रम एक बार और दुहराया जाता है.

नटी : मच्छी[[ले लो..... मच्छी[[[ले लो.....

नट : ;हाव भाव बनाता, मुह बिदकाताद्ध मच्छी !!... छि !

भीड़ लगने की स्थिति को देखते हुए यह क्रम पुनः चलाया जा सकता है, यथेष्ठ दर्शक जुटते ही

नटी : मच्छी[[ले लो..... मच्छी[[[ले लो.....

नट : ;पीछे से अचानक कूद कर सामने आता हैद्ध ऐ मेरी दिलदार, ये क्या किया तैयार... अरे यह क्या लेकर चली... कुछ न बताया, मुझे तू छली ?

नटी : अय हाय मेरे सरकार, पिफर हो गए बीमार... भूल गए आज क्या दिखलाना है, हमारी जनता को आज क्या समझाना है ?

नट : अरी बावरी, इधर तो ताक री... जब मैं हूं नट, तो कैसे भूलूं झट... अपना काम तो जाना पहचाना है...

नट और नटी : हर तरह के नाटक, जनता को दिखलाना है...

नटी : तो हो जाएं शुरू...

दोनों ईशारे करते हैं और एक साथ मिलकर नृत्य करते हुए गाते हैं..

नट और नटी : रे भइया कहानी हम बतलाते हैं... रे भइया...

नट : बात पते की बतलाते हैं... रे भईया...

नटी : रे भईया कहानी दूर गांव की है...

नट : पीपर के ठण्ढे छांव की है.... रे भईया...

नटी : श श श.... चुप... देखो तो कौन आ रहा है मेरे सरकार...

नट : आय हाय मेरी दिलदार... ये तो, ये तो अपनी....

नटी : अ हं हं हं मेरे सरकार... कुछ ना कहना, अभी हमें है चुप ही रहना, चुप ही रहना....

महाजाल / 2

एक धुन उभरता है और उसपर नृत्य करती मछली रानी आती है, पार्श्व से गायन होता है.

गीत : मैं हूं मछली जल की रानी
जीवन मेरा है जी पानी
हाथ ना लगाना डर जाऊंगी
बाहर ना लाना मर जाऊंगी...

मैं हूं मछली जल की रानी
जीवन मेरा है जी पानी

गीत रुकता है और मछली रानी चली जाती है, इसके साथ ही जड़वत् हुए नट–नटी पुनः चैतन्य होते हैं—

नटी : मेरे सरकार ! इसकी क्या थी दरकार... मछली रानी का मतलब क्या है...

नट : अरी दिलदार, ना कर तकरार... मछली रानी आई है, संग संदेशा लाई है...

नट+नटी : कि भाई ये कहानी मछुआरों की है, किस्मत के मारों की है...

नट : गांव है दूर–दराज का, सड़क और बिजली के अकाज का...

नटी : चार कोस पैदल चलकर सड़क पाते हैं, बिजली बाती ना रहने से सांझ ढले सो जाते हैं...

नट : इसी गांव में रहता है हमारा हीरो मछुआ...

नटी : उसकी पत्नी सुगनी और उसका मीता रघुआ...

अन्तिम दोनों संवाद कहते हुए पुनः किनारे जाकर जड़वत् हो जाते हैं. इसी बीच एक ओर चार लोग बैठकर ताश खेलने का दृश्य बना लेते हैं... नट–नटी का संवाद खत्म होते ही रघुआ दौड़ता हुआ आता है...

रघुआ : अरे ए भाई लोगों... कुछ सुना... गजब हो गया गजब...

उसके घबराये हुए आने से सभी चौंकते हैं और खेल छोड़कर हठात् खड़े जाते हैं...

काकू : अरे बात का है रघु...

नन्दू : का गजब हो गया ?

रघुआ : नन्दू भईया ! ऊ अपना मछुआ है न ! मछुआ !!

टेना : हां हां, क क का हुआ उस उस उसको...

रघुआ : पागल हो गया टेना, पागल...

काकू : अरे चुप ! अभी सबेरे तो एक घंटा हमरे साथ था... हमलोग साथ–साथ पोखर गए थे... जाल लेकर...

रघुआ : हां–हां, उधरे से लौट कर तो आया और घर से महाजाल निकलाया...

जीतू : महाजाल !! अभी इतना पानी कहां हय पोखर में...

रघुआ : अरे पानी का जीतू भइया... आग, आग लगाने जा रहा है उसमें...

काका : का ? महाजाल में आग ! चलो चलो...

सभी एक ओर निकलते हैं और पुनः नट–नटी चैतन्य होते हैं...

नट : तो लीजिए मेहरबान... देखिए कहानी महाजाल...

नटी : तेजी का जमाना है कदरदान, इनके इनके पहुंचने से पहले देखिए मछुआ का हाल...

नट नटी पुनः किनारे जाकर जड़वत् होते हैं और मछुआ दिखलाई पड़ता है... जो चिल्ला रहा है —

मछुआ : कहां मर गयी... हम तभी से दियासलाई मांग रहे हैं... का पूरा गांव में एक भी माचिस नहीं है माचिस लाओ... सुगनी !... सुगनी !!... कहां मर गयी...

सुगनी : मर ही जाती तो अच्छा था... हम कितना समझाएं तुमको...

मछुआ : कुछ समझाने–उमझाने की जरुरत नाहीं हय... हमारा फैसला अटल है...

सुगनी : तो हम कब इनकार कर रहे हैं, हम तो खुद ही साल भर से तुमको कह रहे हैं... कोई नया काम करो, मगर ई सब बच्चा जइसा जीद काहे को ?

मछुआ : अब तुम जिद समझो चाहे जो हमको यह सब खतम करना है बस !

सुगनी : तुमरे खतम करने से सब खतम हो जाएगा ?

मछुआ : होए चाहे नाहीं... हमरे जिनगी से तो खतम होएगा !... अब अपनी जिंदगी में कभी मच्छी मारने का नाम भी नहीं लेंगे... मच्छी तो का, हम मच्छी का जाल, बंसी को देखेंगे भी नहीं...

सुगनी : इतना गुस्सा ?

मछुआ : इससे भी बहुत... लाओ दो, कहां हय दियासलाई ?

सुगनी : हम अभी देते हैं दियासलाई, पर अपने कलेजे पर हाथ रखकर एक बात कहो...

मछुआ : देख सुगनी, पिफर हमको बात में मत बहलाव...

सुगनी : तुम का बच्चा हो जो हम बहला लेंगे...

मछुआ : अच्छा बोल का पूछती है ?

सुगनी : पहले अपने कलेजे पर हाथ तो रखो...

मछुआ : ओह... लो रख दिया, अब कहो जल्दी और माचिस दो...

सुगनी : पिफर गुस्सा !! एक छिन के लिए गुस्सा दूर करो और कहो – का सच में तुमरा हिरदय में मछली का काम से नपफरत हो गया है ?

मछुआ : अ अ ;बिल्कुल करंट लगने जैसा अपना हाथ हटाता हैद्ध देख सुगनी... ह हमको भटका मत, हम अब ई सब सोचना भी नहीं चाहते हैं, समझी !

सुगनी : तो मत सोचो न !... तुम कहो तो अभी रोटी बांध दें, चले जाओ सहर काम खोजने...

मछुआ : सो तो हम जाएंगे ही... तू अभी माचिस दे दे बस !

सुगनी : पिफर वही जिद... कहो तो यह महाजाल किसका है ?

मछुआ : किसका क्या, तुम जानती ही नहीं जैसे... यह हमारा पुश्तैनी जाल है...

सुगनी : तो पिफर तुम इसे नहीं जला सकते... अभी बाबा जिन्दा हैं, जाओ पहले उनको पूछ कर आओ, पिफर जो मरजी आये करना...

मछुआ : ओ ओह...

भारी गुस्से में पैर पटकता निकल जाता है... सुगनी बेबस सी देखती अंदर चली जाती है... मछली रानी पुनः नृत्य करती आती है... पार्श्व से गीत चलता है उसी धुन पर...

गीत : मछली–मछली जल की रानी
जीवन तेरा है री पानी
कहां निकलकर किधर जाएगी
बाहर जो निकली मर जाऊंगी...

मछली–मछली जल की रानी
जीवन तेरा है री पानी

मछली रानी चली जाती है, नट–नटी पिफर चैतन्य होते हैं –

नट : अब तो बात बढ़ जायेगी... गांव के बड़े–बुजुर्ग तक जाएगी...

नटी : उधर गांव के लड़के मछुआ के घर धये... लेकिन मछुआ को ढूंढ़ न पाये...

नट : सारी बात पता चली जब सुगनी से... छिड़ गयी बहस इस अग्नि से...

अपने अपने संवाद के साथ नट नटी पुनः किनारे जाकर जड़वत् होते हैं . और गांव के युवक रघुआ, जीतू, काकू, नन्दू, टेना आदि ग्रामीण परिवेश में बहस करते हुए दिखलाई पड़ते हैं...

रघुआ : अरे का ठीक कर रहा है ! हमलोग मछुआरा जाति हैं... यही हमारा काम है...

काकू : एकदम सही बोलता है रघु... इसी काम में जीना और इसी में मरना है....

नन्दू : अरे जा जा... बात करने में का जाता है, जब मरने का मौका आएगा तब पता चलेगा !

जीतू : पता कहते हो भईया... सारी हेकड़ी निकल जाएगी...

टेना : अरे का क क कहते हैं न ! पढ़े क क कपार तो बूझे गं गं गं...

नन्दू : गंवार...

टेना : हां हां... ओही ओही...

रघुआ : अरे चुप कर थोथड़ा कहीं का...

काकू : एई रघू... ई ठीक बात नहीं है...

रघुआ : अरे का ठीक नहीं है... ई लोग बात को समझता नहीं है... बाघ को घांस खाते देखा है, कि हरिण को सिकार करते देखा है ! सब अपना अपना काम करते हैं... समझा...

काकू : हां रे जीतू, रघु का बात ठीक है... अपना धरम छोड़ने से आदमी कहीं का नहीं रहता है...

नन्दू : तो का हो जाता है, मच्छी मारने का छोड़ के दूसरा काम करेंगे तो का हमारा माथा में सींग उग जाएगा !

जीतू : और नहीं तो का ! सब काम करने वाला अदमी का तो जइसे दूसरा दूसरा खून का रंग रहता है ! अरे सब का ओही दू गो हांथ गोड़ होता है काकू...

रघुआ : देखो जीतू, तुम ढेर ताव में मत बोलो... ई खाली तुमरा बात नहीं है बूझा...

जीतू : अरे बाह ! हमहीं ताव में बोल रहे हैं ! बहस कोन चालू किया ?

नन्दू : आउर जब ई पूरा बसती का बात है, तब तुम पफैसला करने वाला कोन है...

रघुआ : देख नन्दू हमको गुस्सा मत दिलाव कह देते हैं...

जीतू : अरे चल, का करेगा रे तुम...

रघुआ : देखना है का !...

काकू : बस बस, आपस में झगड़ा का कोई बात नहीं है, जब पूरा बस्ती का बात है तब पफैसला बाबा करेंगे और कोई नहीं...

नन्दू : हां, ई ना हुआ काम का बात...

टेना : हम तो प प पहिले ही क क कहने च च च चाह रहे थे, मगर क का क क करें...

रघुआ : चलो बाबा अभी बेल चबूतरा के पास होंगे... वहीं चलते हैं...

वे लोग चल पड़ते हैं, नट नटी पुनः चैतन्य होते हैं...

नट : मेरी दिलदार जरा देखो इस गांव में क्या से क्या हो गया है...

नटी : देख रही हूँ मेरे सरकार... मछुआ के छोटे से गुस्से से सबका चैन खो गया है...

नट : सो सब तो ठीक है प्यारी... मगर सुगनी पर है विपदा भारी...

नटी : काहे की विपदा मेरे सरकार...

नट : बेचारी दुःख की मारी है, सुबह से मछुआ का समझा समझा और खुद सोच सोच कर हारी है

अपने अपने संवाद के साथ नट नटी पुनः किनारे जाकर जड़वत् होते हैं . बेचैन टहलती सुगनी दिखलाई पड़ती है...

सुगनी : ओह... हम का करें... हमरे चलते इनको गुस्सा हुआ... अह... अब पूरा बस्ती में घर का बात सब हमरे बारे में का सोचेंगे... अब सोचेंगे तो सोचें... हम भी का करते– कुछ उपाय तो होना चाही... अरे हम अपना बचवा को थोड़ा पढ़ाना चाहे, थोड़ा बढ़िया से रहने का सपना देखे... तो का हम गलती कर दिये... ! लेकिन ई सब का हो गया... पूरा बसती में बात... हम जाते हैं... बाबा को अपने मन का सब बात बताते हैं...

सुगनी भी चल पड़ती है. नट नटी पुनः चैतन्य होते हैं –

नटी : हूं... तो अब होगा असली खेल...

नट : बाबा के आंगन में सबका मेल...

नटी : पिफर हमारा यहां अब क्या काम है मेरे सरकार...

नट : मेरी दिलदार... अभी तो कहानी खतम हुई नहीं... अभी से जाने को तो तइयार...

नटी : ओह होह.... तो चलो भाइयो आपको लिए चलते हैं...

नट+नटी : वहां, जहां बाबा बैठे हैं और मछुआ को समझा रहे हैं...

अपने अपने संवाद के साथ नट नटी पुनः किनारे जाकर जड़वत् होते हैं . बाबा चबूतरे पर बैठे हैं और मछुआ सामने खड़ा है...

बाबा : तेरी बात ठीक है बेटा... लेकिन इससे जीवन नहीं चलता...

मछुआ : देखो दद्दू, जीवन चलता तो हम अइसी बात ही करते... तुम समझते काहे नहीं, हम मछुआरों का जीवन चल नहीं रहा है, ठहर गया है... दुनिया कहां से कहां चली गयी, हम वहीं के वहीं हैं

बाबा : उसमें भी हमारी ही कमी है बेटा, मगर हम दूसरी बात कह रहे थे...

मछुआ : क्या दूसरी बात दद्दू ?

बाबा : बेटा जरा सोचो.. एक देश के सारे किसानों को पता चला कि सरसों उपजाने से ज्यादा लाभ किसी चीज में नहीं है इसलिए सारे किसान सिरपफ सरसों उगाने लगें तो का होगा ?

मछुआ : होगा का बाबा, सब मालामाल हो जाएंगे, जिनगी सुधर जाएगी...

बाबा : यही बात सोचने की है मछु... सरसों से पैसा तो आ जाएगा लेकिन सिरपफ सरसों से पेट नहीं भरेगा... दुकान में भी जमा चावल, दाल, गेहूं कितने दिन रहेगा... दो चार बरस में ही बस पैसा रहेगा और सरसो... तब का होगा ?

इसी बीच ग्रामीणों का दल आकर जमा हो जाता है...

मछुआ : हम समझ गए दद्दू...

रघुआ : अरे का समझ गए... तुमरा चलते पूरा बसती परेसान है...

बाबा : का हुआ रे रघुआ, काहे इतना गरम है ?

रघुआ : होगा का बाबा, ओही बहस... ई सब मछली मारने का छोड़ के दूसरा धंधा करना चाहता है...

बाबा : करने दे न तब... पेट के लिए तो सब जुगाड़ करना पड़ता है... लेकिन धंधा छोड़ने का कोई जरुरत नहीं है... ऊ भी करो और ई भी करो...

जीतू : नईं नईं बाबा... ई मछली मारने से हमको का मिला है.... हम कोई दूसरा काम करेंगे... अरे अपना कहने को घर तक नहीं है हमारा... पूरा बस्ती में कितना आदमी के पास रहने लाईक घर है ?

बाबा : तो दूसरा धंधा करके तेरा घर बन जाएगा ?

रघुआ : हां, बिजली का बटम है कि दबाये और बत्ती जला...

नन्दू : अरे तो अपना ही धंधा करने से कहीं ई गांव में अभी तक बिजली आया है !! एक ठो गाड़ी तक तो आ नहीं पाता है....

मछुआ : जो भी हो, हमको तो जीतू का बात सही लगता है... हम मछुआरे पता नहीं कब से ऐसे ही खनाबदोसों की तरह रहते हैं... जिसको जहां समझ में आया टीन टपरा डाल कर घर बना लिया. ना किसी के पास घर का कागज पत्तर है ना किसी को हमारी फिफकर है...

रघुआ : खैर, ई बात का डर तो हमको भी लगता है, पता नहीं कब कोई अइसा वइसा ऑफिफसर आएगा और हमलोगों को बेदखल कर देगा, तब का होगा ?

बाबा : बात तो ठीक है बेटा, अब पहले का जमाना नहीं है कि राजा महाराजा को एक बड़ी मछली पकड़ कर दे दिया और दो–चार पुश्तों के लिए निश्चिंत हो गए... हमारे घर का कुछ कागज पट्टा तो होना ही चाहिए...

नन्दू : इसीलिए न हम हजार बार कहते हैं कि अपने बस्ती का कोपरेटिव बना लो...

जीतू : अंह ! कोपरेटिब बना लो ! जइसे आज तक कोपरेटिव बनबे नहीं किया हय ? अरे दसों बार तो कोपरेटिव बना... मगर उसका पफायदा का हुआ... चार दिन का चांदनी पिफर अंधेरिया रात

काका : हां हां... पिछला बार तो बहुते खराब हुआ भाई... भला तलाब पोखरा का पता ही नहीं और ओपिसर लोग आ के कोपरेटिव बनवा दिया... आखिर एतना आदमी का पोसाई के लिए तलाब पोखरा रहेगा तब न कोपरेटिव का कमाई से घर चलेगा...

बाबा : अब समय दूसरा हो गया है बेटा... हमारे जमाने में तो इसी बस्ती के आस पास बावन पोखर थे लोग भी इतने नहीं थे... इतना मछली निकलता था कि पूछो मत... अरे कुछ तलाबों की मछली तो हमलोग मारना भी भूल जाते थे, खूब बड़ी हो जाती थीं मछलियाँ...

टेना : ब बाह ! पिफर उसको क क कहां ब बेचते थे ?

बाबा : अरे उस बखत सब तेरी तरह कामचोर नहीं थे... अंधेरा रहते ही बीसों आदमी का टोला निकलता और कंधे पर भार उठाकर दस कोस दूर सहर की आढ़त में सुबह सबेरे तक मछली पहुंचा आता कितना बढ़िया गीत गाते थे हमलोग...

रघुआ : तो अब कौन सा कमी है बाबा ! अब तो नया जुग आ गया है, थोड़े ही दिन में ही खूब मछली पैदा करने का उपाय निकल गया है... गाड़ी मोटर आ गया है...

जीतू : रहने दो, रहने दो अपना गेयान का बात... मान लिए कि छोटा ही सा तलाब में खूब मछली पैदा हो जाता है, मगर जल्दी खराब भी तो होता है... कोपरेटिव तो बना मगर मछली को बाजार पहुंचाने का क्या उपाय हुआ ? उसको सड़ने से बचाने के का हुआ ? उस समय तो तुमही खूब आगे आगे हो रहे थे...

मछुआ : गलती सिरपफ इसका नहीं है जीतू, हम भी उस समय सब बात में हां हां करते गए...

नन्दू : तो काहे करते गए ! डाकटर सलाह दिया था का ?

मछुआ : अब का करें... हमलोग ठहरे गंवार देहाती आदमी, ओपिफसर लोग आकर का का बोला हम कुछ समझे और कुछ समझे भी नहीं...

जीतू : लो और सुन लो... जब बात समझ में नहीं आया तो का जरुरी था मुंडी हिलाने का !

रघुआ : अरे तो का करते... एक तो इतना दूर गांव में कोई जल्दी आता नहीं है... पिफर हमलोग सोचे कि भाई सरकार तो सबके भलाई का ही काम करती है, तो जो होगा सो भलाई का ही बात होगा न ! यही सोचकर हां कर दिये...

मछुआ : हां भाई जीतू.. असल में हमलोगों की भासा तो वो लोग समझते भी नहीं थे न! तो का बात करते, वैसे कोपरेटिव बनने से हमारा कुछ बुरा तो नहीं ही हुआ है..

जीतू : तो भला भी तो नहीं हुआ..

बाबा : इसीलिए न कह रहे हैं बेटा कि अपना धंधा भी करो और दूसरा काम भी करो..

इसी समय सुगनी भी आ जाती है और बाबा की बात सुनकर कहती है...

सुगनी : बाबा ठीक कहते हैं.. हम तो यही कहेंगे कि कुछ न कुछ उपाय जरुर करिये आपलोग कि हमारे बाल बच्चे भी आगे बढ़ें.. कुछ हमरी जिनगी भी सुधरे...

रघुआ : कहने से तो नहीं हो जाता है भउजी... हमलोग जनम से यही काम सीखे हैं, हम अब और का काम करें... ?

काका : ठीक.. बिल्कुल ठीक कहता है रघु... अरे सोचो ! सोचो !!!... जो काम हमरा रोंआ रोंआ में बसा हुआ हय, उसको छोड़ के हम और का करेंगे ? दूसरा काम में हमारा कलेजा कितना दिन जुड़ेगा !! कितना दिन, बोलो ? कितना दिन...?

काका के इस सवाल पर सभी विह्वल हो जाते हैं.... अपने अपने स्थान पर सभी स्थिर हो जाते हैं... नट और नटी प्रविष्ट होते हैं

नट+नटी : सवाल है सवाल, जबाब चाहिए.... सवाल है सवाल, जबाब चाहिए....
हमको भी जीने का हिसाब चाहिए... सवाल है सवाल, जबाब चाहिए....

नट : तो मेरे दिलदार.. अब इस गांव का क्या होगा ? और क्या होगा हमारे नाटक का ?

नटी : ऐ मेरे सरकार, तो लीजिए जबाब है तइयार....

इसके साथ ही नटी दौड़कर बाहर जाती है और मछली रानी को साथ लेकर आती है, पार्श्व से गीत शुरू होता है... उसपर दोनों नृत्य करती हैं...

गीत :
सबने मिलकर जब है ठानी
शुरू करो एक नई कहानी

बदलो खुद को, बदलो दुनिया
छोड़ो बात जो भई पुरानी

नई राह बतलाएगी... जहां चाह पहुंचाएगी
कहती है.. ये मछली रानी...
सबने मिलकर जब है ठानी
शुरू करो एक नई कहानी...

गीत+नृत्य सभी :
मछली मछली.... जल की रानी...
तेरी बात... हमसब ने मानी.....

नृत्य करते हुए सभी प्रस्थान करते हैं....

महाजाल (दूसरा भाग)

(मछुआरों के जीवन पर एक लघु नाटक)

नट और नटी पार्श्व से बजते नक्कारे और अन्य मिश्रित धुनों पर नृत्य करते हुए प्रविष्ट होते हैं... नृत्य संकेत में पिछले भाग की कथा को इंगित करता है नृत्य और अभिनय के द्वारा... इसकी समाप्ति के बाद सहज होने का अभिनय करता हुआ

नट : तो मेरी दिलदार... अब तुम्हारा क्या इरादा है, हमारे दर्शकों से आज क्या वादा है ?...

नटी : मेरे सरकार हम क्या कहें... महाजाल में पफंस गए, अब नदी में कैसे बहें ?

नट : ओह ... तो ऐ बात है... अरे सुनो, सुनो सुनो... कोई मेरी मदद करेगा क्या ? दौड़ो दौड़ो... जल्दी आओ भाईयो... हाय हाय... सुनो सुनो.... मदद मदद... जल्दी दौड़ो...

नटी दौड़ने का अभिनय करती है और एक कोने से दौड़कर नट के सामने आकर हांपफने का अभिनय करती हुई...

नटी : का हुआ भईया... काहे बुलाते हो...

नट : अरे देखो न ! हमारी कहानी महाजाल में पफंस गयी...

नटी : कहानी ! महाजाल में !! यह क्या कोई नए जात की मछली है भाई ?

नट : अरे यह मछली नहीं है... भाइयो, बहनो.... मेहरबान.... कदरदान.... यह मछली नहीं... मछुआरों की कहानी है...

नट+नटी : कहानी जो महाजाल में पफंस गयी.... नीतियों के दलदल में धंस गयी...

नटी : कहानी जो सुगनी और मछुआ की है...

नट : कहानी जो जीतू और रघुआ की है...

नट+नटी : अपनी समस्याओं के महाजाल में पफंसकर छटपटा रही है... बाहर आने को कसमसा रही है...

नटी : बस बस बस मेरे सरकार... बस्ती की चौपाल पर सब जमा हैं....

नट : ऊं... देखूं... हां... ठीक कहा मेरी दिलदार... लगता है आज कुछ होनेवाला है...

नटी : चलो चलो हटो.... हटो हटो भाई... दर्शकों को नाटक देखने दो....

नट : अरे रे रे रे.... हम तो बीच में ही आ गए... मापफ करना भाइयो...

दोनों बाहर चले जाते हैं.... चौपाल और भीड़–भाड़, लगभग सभी जमा हैं.... एक दो अधिकारी के वेश में भी उपस्थित हैं....

मछुआ : अब हम का बोलें सर, ईहे लोग जादा पढ़ा लिखा हय, आपका बात को इहे समझेगा....

अधिकारी : ऊ कहने से होगा, अरे तुमको हम पहिले से जानते हैं... तुम ही गांव के लीडर हय... हम तो तुमको ही जानते हैं भाई...

मछुआ : नईं साहेब, आप इसी से बात कर लीजिए... नईं तो पाछे ई वकील जइसा जिरह करता हय...

अधिकारी : अछा जी बोलो... का नाम हुआ तुम्हारा...?

जीतू : जीतू...

अधिकारी : का बात हय जी कहो ?

जीतू : नईं, हमरा का बात रहेगा ! हम तो सबका बात को ही न बोलते हैं...

अधिकारी : अछा तो बोलिए न ! का हुआ ?

जीतू : कुछ नहीं, का होगा ! आपलोग कहते हैं तो अपना काम जरुर करेंगे... लेकिन हमलोग का बात को सुनने के लिए कौन बैठा हय जो ?

अधिकारी : अरे भाई आपका बाते सुनने के लिए हम आए हैं, कहिये ?

जीतू : खाली बात सुनने से तो नईं होगा न साहेब ! कुछ काम भी तो करना होगा...

अधिकारी : अरे तो बोलो न का काम चाहिए... तलाब बनवा दें !

जीतू : सब कीजिए लेकिन समय पर कीजिए...

बाबा : चुप रह... साहेब लोग से कइसे बोलता हय रहे !...

अधिकारी : नईं... नईं कोई बात नहीं है... बोलो जी जीतू...

जीतू : हम अब और का बोलें !... बरसात का पहले जीरा–ऊरा मिल जाता, सही चीज मिलता तब न आदमी ठीक से मछली पालेगा... अब चाहे तो बीजा ओतना दूर आपका ओपिफस में मिलता हय चाहे बेपारी लाता हय तब मिलता हय... किसी का कोई गरांटी नहीं है...

रघुआ : हां साहेब पिछला बरिस चार बार ऑपिफस गये तब जाके पता चला कि अगिला हप्ता से मछली का जीरा मिलेगा... पूरा साढ़े तीन सव भाड़ा खरचा किये तब पांच सव का जीरा लाये...

अधिकारी : अरे भाई तो पफोन कर लेते...

नन्दू : ऐहां का पफोन का भरोसा रहेंगे तब तो दूसरा सीजन भी निगल जाएगा...

अधिकारी : तो कोई बात नहीं है भाई हमलोग जीरा सस्ता भी तो देते हैं... कितना सबसीडी देते हैं नहीं देखते हैं... एतना में के देगा आपको...

टेना : क क का... स स सब... डीडी ?

रघुआ : चुप रे... हम तो कहते हैं साहेब कि ईघर हमलोगों का गांवे तरपफ बीजा मिलने का इंतजाम कर दीजिए...

जीतू : और का... इघर ही मछली जीरा तइयार करने से छोटा–बड़ा सब किसान मछली पाल सकेगा...

मछुआ : अरे सो तो ठीक है जीतू, मगर तलाब का का करेंगे...

अधिकारी : काहे जी ! तलाब हमलोग नहीं खुदवाते हैं का ?

जीतू : अब हम का बोलें, आप खिसाइये जाइएगा साहब...

अधिकारी : अरे नहीं जी, तुम बोलो न !

जीतू : तीन बरस पहिले भी तो बना था तालाब... जहां मन किया बना दिए...

अधिकारी : अब उसमें हम का करें... जो जगह मिलेगा वहीं न बनेगा...

नन्दू : सो तो आपही जानिए साहेब, लेकिन उसमें तो कभी मछली पालने जइसा पानी रहता ही नहीं है एकदम बेकार जगह में बना हय...

बाबा : ई बात तो बचवा ठीके कहता हय साहेब... टांड़ जइसा जमीन में तलाब खोदने से पानी कइसे रहेगा...

अधिकारी : देखिए भाई, आपलोग जानकारी रखिएगा तब्बे न ! सरकार कितना स्कीम चलाया हय... हमलोग तो आतही रहते हैं... एक्सपर्ट लोग का सलाह लीजिएगा तो सब ठीक हो जाएगा... समझे !

सुगनी : हमरा तो इहे सलाह होगा हजूर कि जनाना लोग का भी कुछ परबंध कर दीजिए... बड़ा मोसकिल होता हय, हमलोग को सड़क के किनारे मछली बेचना पड़ता हय... धूप, धुला, पानी सब सहना पड़ता हय... बहुत खराब लगता हय हजूर...

अधिकारी : हं हं... सब होगा भाई आपलोग मछुआ को हमारे ऑफिस में भेज दीजिएगा... हम अपना एक्सपर्ट को भेज देंगे, ऊ सबका जानकारी देगा आपलोगों को... अच्छा अब हम जाते हैं... एक दू मिलेज में आउरो जाना हय...

बाबा : हं–हं... जाइए बाबू... अच्छा ! परनाम... जा रे मछुआ साहब को छोड़ के आ... चलो अब तुम लोग भी चलो...

नट और नटी नृत्य करते हुए प्रविष्ट होते हैं.... बाकी सभी कलाकार स्थिर हो जाते हैं...

नट+नटी : नमस्ते नमस्ते... नमस्ते नमस्ते... हम तो आते भईया करो नमस्ते... तुम तो जाते भइया करो नमस्ते नमस्ते नमस्ते ... नमस्ते नमस्ते...

नट : जल्दी में हैं, करो नमस्ते...

नटी : गलती में हैं, करो नमस्ते...

नट+नटी : अटपट आये नमस्ते नमस्ते... झटपट गये नमस्ते नमस्ते... नमस्ते नमस्ते... नमस्ते नमस्ते...

नट : तो भाईयो... एक गए और दूसरे आते हैं...

नटी : मछुआरों को मछलीपालन की नई तकनीक समझाते हैं...

संवाद के साथ ही नट–नटी किनारे जाकर स्थिर हो जाते हैं और झारीटेदार संगीत के साथ ग्रामीण चैतन्य होते हैं...

टेना : नन्दू भइया ! ई ई ई... इसकीम क क का होता हय...

जीतू : ओही जो तुम और नन्दू बईठ के मंगरु का खेत से खीरा चोराने का तरीका बनाते हो न ! उसी को इसकीम कहते हैं...

टेना : क क का जीतू भ भ भइया... भाग... अच्छा ई ए ए ए सपरट... क का ...

जीतू : अरे चुप... सब बतलाने का ठीका हमहीं लिए हैं का ...

रघुआ : देखो जीतू... बस्ती में ज्यादा पढ़ा लिखा तुमहीं हो... तो आदमी किसका आसरा करेगा... बेचारा पूछ रहा है तो बताते काहे नहीं हो, आंय...

जीतू : अंह, बेचारा ! दिन में दस बार तो तुम इसको थोथड़ा कहते हो, अभी बेचारा हो गया !

रघुआ : अरे नहीं जानते हो तो सीधे काहे नहीं कहते...

जीतू : हां, नहीं जानते हैं... कोई तुमरा धरते हैं का बताने का...

बाबा : अरे काहे बात बात में लड़ता हय रे तुमलोग ?... सब मिल बैठ कर कुछ उपाय करता तो जब देखो, बस कांव–कांव... ओह रे ई गरम खून !!

काका : हां–हां चलो बैठो, आज मछुआ ऊ साहेब को लाने गया है, आता ही होगा अब...

जीतू : आएगा तो का होगा, वही सब आसन भासन देगा न !... कोई पइसा तो नहीं दे देगा !

नन्दू : पइसा से ही सब होता हय का जीतू ?

जीतू : तो का खाली भासन से होता हय ! अइसे मछली पालो, एतना दिन में खाद डालना, एतना दिन में दवाई देना... मछली का बच्चा अइसे करने से बढ़िया होता है... तो पफलाना जाति का मछली से ज्यादा कमाई होगा... ई सब बात कोन नहीं जानता है...

काका : देखो भाई... अब सब नया नया बात तो हमलोगों को पता नहींए चलता है भाई...

रघुआ : ई बात ठीक है भाई, सब किसान को ठीक से नया बात का जानकारी नहीं मिलता है... लेकिन जीतू भी ठीक कहता है... बिना पूंजी के खाली जानकारी से का पफायदा होगा... सरकार इसके लिए तो कुछ करबे नहीं करता है...

बाबा : काहे रे रघुआ... लोन तो मिलता ही है न !

जीतू : अंह, लोन का इतना असान है ? दस जूता घिस जाएगा...

नन्दू : अरे हमसे पूछो न ! पिछला बार लोन का उम्मीद में हम भी हिम्मत किए थे न !... समय से लोन मिल ही जाएगा-सोच के साहू से पइसा ले के जीरा–बीज खरीदे... दूसरा इंतिजाम सब किए लेकिन हुआ का ?

जीतू : छोड़ो नन्दू, ई बात सबको पता है...

टेना : ह ह हमको नईं ह ह है पता ?

जीतू : अरे चार महीना बैक, तो ब्लौक तो मछली ऑपिफस तो कहां कहां दौड़ा... जब तक इसको लोन मिला न ! तब तक साहू का पइसा बढ़ के तीन गुना हो गया टेना... बेचारा पूरा पइसा उठा के सीधे साहू को दिया और मछली बेचा उससे बाकी करजा चुकाया...

काका : ई सब तो संजोग का बात हय भाई...

रघुआ : संजोग का बात नहीं है काका, ई सब लापरवाही का बात हय... समय से पईसा मिल जाता तो बेचारा साहू से उधर काहे लेता... एतना दौड़–धूप करके इसको का मिला ? मछली खाया वही न इसका कमाई हुआ... आखिर तो घर चलाने के लिए दूसरा उपाय करना ही पड़ा...

टेना : ओ देखो म म मछुआ भ भ भ...

रघुआ : बस बस रहने दे... समझ गए हमलोग... आइए... परनाम साहेब...

नए अधिकारी के साथ मछुआ आता है... सब अभिवादन करते हैं... बाबा उसको चबूतरे पर बैठा कर खुद नीचे बैठते हैं...

नया अ. : वड़क्कम जी... बड़क्कम...

टेना : ब ब बड़कम् ?

नया अ. : अम नमस्कार किया जी...

सभी फिर नमस्कार करते हैं.

नया अ. : यू नो... अम टेकनिकल... तुम जो बी पुछेगा... अम बताएगा!...

मछुआ : हम का पूछें बाबू... हमारे बस्ती में भी मछली का अच्छा कारोबार चले, सबको रोजगार मिले... उसका कुछ उपाय बताते तो ठीक होता...

नया अ. : अइयो... कारोबार... मिस बिजनेस... देको.... अम तो टेकनिकल... मचली केसे पालता... केसे बहुत ओता सो बताता... बिजीनेस इज नाट माई पारट... बट यू नो... अम बोत घूमा... एक बात बोलेगा... तुमलोग सेल्फ ऐल्प ग्रुप काय नई बनाता ?

रघुआ : का बोले साहेब ! का ग्रुप ?

नया अ. : यू नो... मिल जुल के अपना मदद आप में करो जी...

बाबा : वही तो हम ई लोग को समझा रहे हैं... अब मछुआ बात उठा ही दिया है और सब लोग जमा हो ही गये हो तो सब मिल जुल कर काम करो बच्चों...

नया अ. : अइयो पादर ठीक बोलता जी... अपना मदद करेगा तो बगवान बी मदद करेगा...

नन्दू : इसका मतलब कि हमलोग अपना पइसा लगायें... सब मिल के थोड़ा थोड़ा भी करके पूंजी खड़ा करें...

रघुआ : सो तो हो जाएगा नन्दू... मगर तालाब कहां से लाओगे ? मछली पालने के लिए तालाब कौन देगा हमको ? बोलिए साहेब...

नया अ. : यू नो... इसमें अम कुच नई बोल सकता... अम तो टेकनिकल... दिस इज गारमेंट पारट.... तुमलोक गारमेंट को एप्लाई करेगा तो पांड मिल सकता... यू नो... गवरमेंट दे सकता जी...

जीतू : आप हमलोगों को दस साल के लिए तालाब दिलाइये न सर ! फिर देखिए हम का करते हैं सो...

नया अ. : नो नो नो... यू नो अब कुच नई कर सकता... तुम सेल्फ ऐल्प ग्रुप बनाओ आर गारमेंट को एप्लाई करो... अम अइसा दूसरे जगह में देका ... यू नो... मॉडल बिलेज... अइयो... कितना सुंदर...

नए अधिकारी के साथ सभी स्थिर होते हैं... नट और नटी नृत्य करते और गीत गाते आते हैं....

नट+नटी : हमने देखा सुंदर गांव.... मछुआरों के रहने का कितना सुंदर ठांव...

नट : साथ हैं जीते, साथ हैं मरते...

नटी : अपनी मदद वे आप हैं करते...

नट+नटी : साथ हैं जीते, साथ हैं मरते... अनी मदद वे आप हैं करते
बना लिया है उन्होंने अपना... हो... ओ... बना लिया हैं उन्होंने अपना

नट : एक छत के नीचे चांव...

नट+नटी : हमने देखा सुंदर गांव... मछुआरों के रहने का कितना सुंदर ठांव...

नटी : अय हय मेरे सरकार ! ये चांव क्या बला है, जो तुमने गीत में डला है ?

नट : अरी बावरी सुन... चाहो, आओ और पाओ... इसलिए बनाया चांव....

नटी : अरे रे रे रे... ये क्या अंड बंड बोलने लगे !.... वैसे भी दर्शक बोर हो रहे हैं.... ये सब करोगे तो सड़े टमाटर मिलने लगेंगे हां...

नट : देखो नटी... वह जो गांव है न ! वहां पर एक ही घर में मछुआरों को सब सुविधा मिलती है... एक ही छत के नीचे... समझी...

नटी : अरे तो क्या मैंने नहीं देखा है ? वहां तो एक ही छत के नीचे लोन भी मिलता है और मछली के लिए बीज चारा, दवाई, साजो सामान के साथ साथ हर तरह की जानकारी भी ... तब ही तो...

नट : हां... तब ही तो है वह...

नट+नटी : एक ऐसा सुंदर गांव, एक ऐसा सुंदर गांव...
मछुआरों के रहने का, जो है सुंदर ठांव...

नटी : खूब मछलियाँ पैदा करते...

नट : ढंग से जीते, ढंग से रहते...

नट+नटी : नहीं होती है उनमें आपसी.... ओ हो... नहीं होती है उनमें आपसी...
झंझट और ना कांव–कांव...

नट+नटी : हमने देखा सुंदर गांव... मछुआरों के रहने का कितना सुंदर ठांव...

नट नटी जाते हैं, बाकी कलाकार पुनः चैतन्य होते हैं

नया अ. : अइयो... ऐसा मॉडल गांव... देखने का जी...

मछुआ : हमलोग भी अइसा कर सकते हैं का साहेब...?

नया अ. : यू नो... आदमी चाअता तो सबकुच कर सकता... आदमा चाआ, चांद पर गया... तुमलोग चायेगा तो मचली कूब ओगा... यू नो... लाइफ चैंज ओ जाएगा... तुमलोग अमको बोलेगा तो अब टैकनिकल सपोट देगा...

जीतू : सो सब तो हो जाएगा साहेब ! मगर कभी अचानक काई कारन से मारा हुआ मछली नहीं बिका और सारा सड़ गया तब... एक ही बार में सारा बिजनेस चौपट...

नया अ. : अइयो... इन्श्योरेंस... उदर का मिलेज में मचली का इन्श्योरेन्स बी किया... अइसा करने से बिजनेस पूरा सेप ओगा जी... यूनो

मछुआ : लेकिन सो अब हमलोगों के लिए कौन करेगा साहेब ?

नया अ. : अम तो नईं कर सकता... ओनली गारमेंट... गारमेंट पॉलिसी देगा तभी कुच ओगा... यू नो ... तुमलोग डिमांड करेगा तो ओ सकता अय...

नन्दू : बाप रे ! इतना सब बात... ई सब हमलोगों को कौन बताएगा रोज रोज...

बाबा : अरे भाई तुमलोग बात को समझो बेटा... समझो...

टैना : क का समझें बाबा... अ आगे तो अंगरेजी और ब ब बाद में ई स साहेब का भ भ भासा... कइसे स स समझें

बाबा : देखो बेटा... पहले अपना मदद खुद करने का मन बनाओ... फिर सब मिल के एक आदमी को चुनो... वही तुम लोगों को सब बात समझा देगा...

मछुआ : हम तो कहेंगे जीतू को चुन लो और अभिये से काम सुरु करो...

नया अ. : अइयो... एकदम ठीक... एक आदमी चुनेगा तो उसको सब तरअ का टेकनिकल नोलेज अम देगा... ओ पूरा से ट्रेण्ड ओ जाएगा... तब तुमलोग का काम अचा चलेगा...

रघुआ : तो हम अभिये इसके लिए जीतू को चुनते हैं... का भाइयो... का कहते हो...

सभी : हां... हां... एकदम ठीक रहेगा...

नया अ. : अइयो... बहुत अचा जी... तब अबी अम जाता... यू नो... अब तुमलोग टीक... अचा काम करेगा... ओ कआ अय न... ईफ देअर इज अ विल... देअर इज अ वे...

टेना : ई क क का बोले स स सर ?

जीतू : इसका मतलब हय टेना ... जहाँ चाह, वहाँ राह... समझे...

सभी : हां हा भाई समझे...

फिर सभी स्थिर होते हैं...और नट नटी आते हैं...

नट+नटी : चल पड़ी चल पड़ी चल पड़ी... इस गांव की गड्डी चल पड़ी...
खुदकी मदद को तइयार... चुनके एक जानकार... निकल पड़ी...
चल पड़ी चल पड़ी चल पड़ी... इस गांव की गड्डी चल पड़ी...

नटी : तो मेरे सरकार... इस गांव की कहानी तो हो गयी खत्म...

नट : हां, और मछुआरों को अपनी तरक्की का हो गया है इल्म...

नटी : तो अब हम चलें...

नट : हां, चलें...

नट+नटी : तो मेहरबान... कदरदान... श्रीमती और श्रीमान्... आपने हमारा नाटक देखा... आपको बहुत बहुत धन्य...

नटी : अरे अरे सरकार... एक मिनट... उधर तो देखिए...

नट : आंय... अरे ! मछली रानी !!...

मछली नारी नृत्य करती आती है...

गीत :

मैं हूं मछली जल की रानी
अपने ढग से जीती हूं...
अपनी मदद जो करते हैं,
संग उन्हीं के रहते हूं
मैं हूं मछली जल की रानी...
चलो संग संग तुम भी हमारे
ओ मेरे प्यारे मछुआरे...
मैं हूं मछली जल की रानी

प ट ा क्षे प

English Script

Mahajal – The Big Fishing Net
A drama based on the lives of fisherfolk

Act One

Enter Nati (the Female Narrator). She is acting as if she has a basket-load of fish on her head and, moving around, announces the availability of fresh fish for sale. Nat (the Male Narrator) looks at her as if very surprised.

Nati Fish … fresh fish … take away … buy … fish … fresh fish.

Nat *(Surprised)* Fish … fresh fish … Oh, shit! … Fish … shit!

This is repeated once more around the "stage".

Nati Take some fresh fish … fresh fish.

Nat Fish … Oh, shit!

This is repeated again to attract a crowd.

Nati Take some fresh fish … fresh fish.

Nat (*Suddenly coming in front of Nati, jumping)* Oh, my dear, what is all this? … What are you carrying? … You didn't even tell me, you cheat!

Nati	Oh, my dear, you appear to be sick again … Forgotten what we have to show today … What have we to tell our audience today?
Nat	Oh dear, just look here … I am Nat … How can I forget? … Our work is well known.
Nat and Nati	We have to show a play to the public.
Nati	Then let us begin!

Nat and Nati start singing and dancing together.

Nat and Nati	Oh brothers … we tell you a story.
Nat	We tell you worthy words, Oh brothers.
Nati	The story is of a far-off village.
Nat	From the cool shade of the *peepul* tree.
Nati	Shh … shh … shh … Silence … Look who is coming, my dear.
Nat	Oh dear, This is … This is … Our …
Nati	Ah … Ah … Ah … My dear, don't say anything, we have to stay quiet.

Enter the Queen Fish, dancing to a tune and a beautiful song from the background. When the song is over, the Queen Fish exits. The narrators come back to action.

Nati My dear, make me clear … What's the significance of the Queen Fish?

Nat Oh dear, don't argue … the Queen Fish has come with a message.

Nat and Nati Oh brothers, this is the story of fishermen … of those unlucky ones.

Nat From a far-off village … without any road and electricity.

Nati Walk six miles to reach the road head … where everybody sleeps soon after sunset as there is no light.

Nat Here, in this village, lives our hero … Machhua.

Nati His wife Sugni and friend Raghua.

The narrators move to a corner. Four fishermen are playing cards in another corner. Raghua enters running.

Raghua Friends, did you hear anything? Shocking … something shocking!

Seeing Raghua so shocked, all of them stop playing and surround him.

Kaku What's the matter, Raghu?

Nandu What is it that is shocking?

Raghua Nandu, brother! Machhua … our Machhua!

Tena Yes, yes … Wha … Wha … What happened to him?

Raghua He has gone mad, Tena … Mad!

Kaku What rubbish? He was with me in the morning for an hour. We had gone to the pond together with the nets.

Raghua Yes, yes, after returning from there, he took out the *mahajal* from the house.

Jitu *Mahajal*! There isn't that much water in the pond.

Raghua It is not water, Jitu. He is going to set fire to the net!

Kaku What? Setting fire to the *mahajal*! Let's go there … let's go!

They all exit from one corner. The narrators come into action again.

Nat So, gentlemen … here is the story of *mahajal*.

Nati Time flies very fast, so before they come, please see what is happening to Machhua.

The narrators freeze. Enter Machhua, shouting and very upset.

Machhua Where the hell are you? … I am asking for a matchbox since long … Is there no matchbox in the whole village … Give me the matchbox, Sugni … Sugni, are you dead?

Sugni It would have been better if I were dead … How do I convince you?

Machhua I don't want you to tell me anything … My decision is final.

Sugni But, when have I disagreed with you … I am myself telling you for a year now to take up a new job … But why this child-like behavior?

Machhua Now whatever you think … I want to put an end to all this.

Sugni Do you think that by your putting an end to this, all that will end up?

Machhua Whether or not? … At least it will have nothing to do with my life any more … Now, I don't ever want to think of fishing in all my life … What to say of fish? … I don't even want to see the net and the rod and line.

Sugni So much of anger?

Machhua Much more than this … Give me … give me the matchbox.

Sugni I shall give you the matchbox just now … but first keep your hand on your heart and tell me one thing.

Machhua See Sugni … Don't try to mislead me by your arguments.

Sugni Are you a child that I will mislead you?

Machhua OK, what do you want to ask?

Sugni First you keep your hand on your heart.

Machhua Oh … (*Keeps his hand on his heart)* … Tell me quickly and give me the matchbox.

Sugni Again the anger! Be cool for a moment and tell me … Are you truly fed up with fishing?

Machhua Ah … Ah … (*Removes his hand as if shocked by an electric current*) … See Sugni … Don't mislead me … I don't want to think all this … understand!

Sugni Then don't think! If you want … I will give you *roti* [food] just now … go to the town and find a job.

Machhua That I will certainly do … Now you give me the matchbox and that's all!

Sugni Again the same adamancy! Tell me … whose net is this?

Machhua Whose? … As if you don't know … this is our ancestral net.

Sugni Then you can't set fire to it … Baba [Grandpa] is alive at present … First, you ask him, then do whatever you want.

Machuwa Oh … Oh!

Exit Machhua in great anger. Sugni, helpless, also exits. Enter the Queen Fish, dancing. There is a song and music in the background.

Fish - Fish, the Queen of water
Your life is water
Where will you go from here?
If you come out, you will die
Fish - Fish, the Queen of water
Your life is water

Exit the Queen Fish. The narrators come again into action.

Nat — Now the situation will worsen … All the elders in the village will come to know of it.

Nati — The village boys went to Machhua's home but could not find him.

Nat — When the whole story was known from Sugni, the discussions caught fire.

Nat and Nati move back to the corner. The village youth Raghua, Jitu, Nandu, Tena and others are seen discussing in the rural setting.

Raghua — Is he doing the right thing? We belong to the fishermen community… this is our work.

Kaku — Raghu is absolutely correct … We have to depend on it entirely.

Nandu — Forget it … It's easy to talk like that … but you would realize when evil days will fall on you.

Jitu — Realize it? All this pride will be lost.

Tena — Wha … Wha … What do we s … s … say?

Nandu — Fool!

Tena — Yes … yes … That's it!

Raghua — Shut your mouth, you stammerer!

Kaku — Oh Raghu, this is not proper.

Raghua — What's wrong in it? These people don't understand anything… Have you seen a tiger eating grass or a deer hunting? … Each one has to do one's own work … understand.

Kaku — Yes Jitu, Raghu is right … Leaving your profession takes you nowhere.

Nandu — What will happen then? If we will leave fishing and take up some other job, will we develop horns on our head?

Jitu — And what else! ... As if those who are involved in other work have different colors of blood? Kaku, all have the same pair of legs and hands.

Raghua — See Jitu … Don't talk so roughly… This is not only your problem.

Jitu What? … Am I talking roughly?… Who started the argument?

Nandu This concerns the whole village … Who are you then to take a decision?

Raghua See Nandu … Don't make me angry.

Jitu Oh, forget it … What will you do?

Raghua Do you want to see that …?

Kaku Stop, stop … No need to quarrel amongst ourselves … since it concerns the whole village … Baba alone will take the decision.

Nandu Yes … This is a good suggestion.

Tena I wanted to te … te … tell it ea … ea … earlier, but what can I d …d … do?

Raghua Let's go … Baba should be near the meeting point [raised platform where the villagers sit to discuss matters related to them] … We go there.

Exit all villagers. The narrators come into action again.

Nat Oh my dear, see what happened in this village?

Nati I am seeing, my dear, all have lost their peace of mind owing to Machhua's anger.

Nat All that is fine, dear … but Sugni is in great trouble.

Nati What trouble, my dear?

Nat She is very unhappy … She is trying to pacify Machhua since morning and tired of thinking herself.

The narrators freeze in the corners once again. Sugni is seen moving around with a disturbed frame of mind.

Sugni Oh … what should I do? … He is angry because of me… Oh … now the whole village will know of our personal problem … What will the people think of me … Let them think whatever they will, after all, what can I do? There must be a solution to all this … I just wanted my children to be educated … dreamt of having a slightly better standard of living… Have I done anything wrong? … But what has happened … it is the talk of the whole village … I should go and tell Baba everything that is in my mind.

Exit Sugni. The narrators come back to action.

Nati So, the true play will start now!

Nat All will be meeting in the verandah of Baba.

Nati So what is the need for us here, my dear?

Nat My dear, the story hasn't ended yet … and you are ready to go!

Nati Oh, brothers … then let us take you there.

Nat and Nati There … where Baba is sitting and making Machhua understand.

The narrators freeze again. Baba is sitting on the platform and Machhua is standing in front of him.

Baba You are right, my son … but life doesn't depend on that … This cannot provide you sustainable living.

Machhua Look Baba, if it was sustainable, I won't have said it … Why don't you understand? … We fishermen are not having a sustainable living … our growth is at a standstill … The world has changed so much but we are where we were.

Baba That is also our fault, my son … But I was telling you something else.

Machhua What else, Baba?

Baba My son … think for a while … If all the farmers of a country come to know that there is nothing more profitable than mustard cultivation and therefore if all of them start raising mustard, then what will happen?

Machhua What will happen? All will be rich … Living conditions will improve.

Baba — Machhua … this is what needs to be understood … Mustard will get money but that will not satisfy your hunger … How long would the rice, lentil and wheat in the shop last? … The money will last for two to four years … and so also mustard … What will happen then?

Enter the group of villagers.

Machhua — I understand, Baba.

Raghua — Understand what? … The whole village is disturbed because of you.

Baba — What happened, Raghua? Why are you so angry?

Raghua — Happened … what? … The same argument, Baba … All of them want to leave the fishing profession and do some other job.

Baba — Then … let them do … One has to do many things for a living … but it is not necessary to leave one's profession … Do that and do this as well.

Jitu — No … No … Baba … What have we got from fishing? … We will do some other job … We don't even have a house of our own … How many people in the village have a proper house to live in?

Baba — Then … will you have a house by doing some other job?

Raghua — Yes … as if it is an electric button that you press and the bulb will glow?

Nandu — Er … even our own profession has not helped us to get electricity in this village … Not even a single vehicle comes.

Machhua — Whatever it may be, I think Jitu is right … We fishermen have been living a nomadic life for so long. Wherever one wanted, he put up a tin roof and made a house … Neither are there any papers about the house nor is there anybody to care for us.

Raghua — Well … this horrifies me too … Who knows when an officer may come and throw us out of our house? What will we do then?

Baba — You are right, my son … These are not olden times that by giving a big fish to the king you could forget the problem for two to four years … We should have, at least, some legal documents about our houses.

Nandu — That's why I have said it a thousand times that we should form a cooperative in our village!

Jitu — Oh! Cooperative! As if we have had no cooperative in the village so far … Tens of times a cooperative was formed … but how did it benefit us? It was only a short-lived benefit!

Kaku — Yes … last time it was so bad … There was no trace of a pond or tank and the officers came and formed a cooperative … Only when there are ponds or tanks for sustaining so many people … the earnings from the cooperative would help run the household expenses.

Baba — It is a different age now, my son … In our times, there were 52 ponds around our village … There were not so many people also … Such a large quantity of fish was being harvested that you can't even imagine … Sometimes we even forgot to harvest the fishes from some ponds … The fishes used to grow to very large sizes.

Tena — Gr … Gr … Great! … Then where did y … y … you sell them?

Baba — Oh, at that time the people were not lazy like you … Much before the dawn, a group of over 20 people would take the fish on slings and reach the fish to the auctioneer in the city market situated ten miles away. How melodious were the songs that we used to sing!

Raghua — So, what is it that is lacking now, Baba? We are living in the new age … Techniques to raise large quantities of fish in a few days have been developed … Transport is also available now.

Jitu — OK, OK … Keep this fund of knowledge with you. Agreed that large quantities of fish could be produced in a small pond … but it spoils also in no time … Cooperative was formed … but what was the arrangement to transport it to the market? What about preventing it from spoilage? … At that time you were leading and very excited!

Machhua — The fault is not only his, Jitu … I also agreed with everything at that time.

Nandu — So, why did you agree? Did the doctor advise you to do that?

Machhua — What to do? … We are illiterate village people … When the officers came and spoke we understood only a little bit.

Jitu — Now, listen to all this … When you didn't understand the matter, was it necessary to nod the head?

Raghua — So what could we do? … Our village is so far that no one visits easily… Then we thought that since the government works for the benefit of the people, hence whatever would be done would be beneficial for us … Thinking so, we agreed to all that the officers said.

Machhua — Yes, brother Jitu … Actually they didn't understand our language too, so what could we say? … But have we not lost anything due to the formation of the cooperative?

Jitu — It hasn't done any good, too!

Baba — That's why I am telling you, my sons, practice your traditional profession and do the other job also.

Enter Sugni, listening to Baba's advice.

Sugni — Baba is right … I would only say that please do something so that our children get better … and our living standard also improves.

Raghua — It is easily said than done, Bahuji [form of address] … Since birth we have been involved in our own profession.. What else could we do now?

Kaku — Right … Raghu is very correct … Think! … Think for a while! The profession which has been a part of our life … leaving that, what else could we do? … For how many days will our heart allow us to continue with the new job? For how many days, tell me … how many days?

All actors freeze. Enter narrators.

Nat and Nati — There is a question … an answer is required … There is a question … an answer is required … We also need to know the ways to better life … There is a question … an answer is required.

Nat — Then my dear … What will happen to this village now? … And what will happen to our drama?

Nati — Then my dear … the answer is here.

Nati exits and comes back with the Queen Fish and dances with her. There is a song in the background.

When everyone has decided
To write a new chapter
Change yourself and change the world
Forget all that has gone old
New path will be laid
Where the aspirations will take
Says this … the Queen Fish
When everyone has decided
To write a new chapter

All — Fish … Oh Fish … Queen of Water … Your advice … We have all agreed …

End of Act One

Act Two

Nat and Nati enter the "stage", dancing and singing.

Nat — Oh, my dear … What is it that we need to tell our viewers today?

Nati — Oh, my dear … We are caught in the *mahajal* … Now … how do we drift in the river?

Nat — So, this is the problem … Come, please come … run … run and help me.

Nati starts running and comes to one corner, breathing heavily and pretends as if tired.

Nati — What's the matter? … Why are you calling?

Nat — Why don't you see that our story is trapped in the *mahajal*?

Nati — Story? … In *mahajal*? … Is it a new type of fish?

Nat — No, it is not a fish, brothers … sisters … ladies and gentlemen … This is not a fish, but the story of fishermen.

Nat and Nati — Story … that is trapped in the *mahajal* … in the quagmire of policies!

Nati — The story of Sugni and Machhua …

Nat — The story of Jitu and Raghua …

Nat and Nati — Trapped in the meshes of its own problems and struggling to wriggle out …

Nati — Fine enough, my dear … All the fishermen have now gathered at the meeting point in the village.

Nat — Look there … Oh there … It appears that something is going to happen today.

Nati — Please move away and make way … Let the public watch the play!

Nat — Oh, I am sorry that I am hindering their view.

Exit Nat and Nati. The crowd gathers at the meeting point where some district officers are also seen.

Machhua — What do I tell you, sir? … These people are educated and will be able to follow you.

Officer — Why do you say that? … I know you for so many years … You are the village leader and I recognize you alone.

Machhua — No, sir … Please talk to him only … Otherwise he will question like an advocate.

Officer — OK, please let me know your name?

Jitu — Jitu.

Officer — What's the matter? Please speak.

Jitu — No, what do I say? … I am only putting forth the fishermen's viewpoints.

Officer — OK, tell me what happened.

Jitu — Nothing! … What will happen? … We will do what you would suggest but who is there to listen to us?

Officer — Yes, please speak … We have come to listen to you.

Jitu — Just listening to our problems will not do! … You will also have to do something.

Officer — Why don't you speak out as to what you want? Shall we dig a pond?

Jitu — Do whatever you will but let it be done on time!

Baba — Keep quiet! … Is it the way to speak to the officers?

Officer — Don't bother! Come on, speak Jitu, speak.

Jitu — What should I say? … If we had the seed before the monsoon, quality seed, then it was possible to raise a good crop of fish … Now the seed is either available in your office that is far-off or else when the trader brings it … There is no surety about its availability anywhere.

Raghua — Yes sir … Last year I visited your office four times when I learnt that the seed was to be made available the next week. I spent 350 Rupees on travel alone and then I could get the seed for 500 Rupees.

Officer — My dear friend, you should have called us on the phone.

Nandu — Where is the guarantee that we would get the line … It would then be in the next season only that we would get the seed.

Officer — Why do you bother so much? … Don't you realize that we give you the seed at such a low cost? … With what amount of subsidy? Will you get it elsewhere?

Tena — Wh … a … t… s… ub … sidy… ?

Raghua — Tena, keep quiet. We request you to make arrangements for the availability of the seed in our village.

Jitu — What else! … If the seed is produced in the village, each one of the big or small farmers would be able to do fish culture.

Machhua — That's right, Jitu! … But what do we do about the pond?

Officer — What? … Do we not get the ponds excavated?

Jitu — What should I tell you? … It will displease you!

Officer — No … no … you tell me.

Jitu — Three years ago you had got a pond constructed … you got it excavated where you liked.

Officer — What can I do about it? … It has to be constructed where the land is available.

Nandu — Well, it is up to you but it does not retain any water for fish culture … It has been constructed on an improper site.

Baba — This is true, *Saheb* … Can the water be stored in the upland?

Officer — Listen … Please note how many schemes are being operated by the government. We keep coming … Just take the advice of the experts and it will solve your problem.

Sugni — Sir … I would request you to please do something for the women too … as we have to sit in the sun, rain and dust on the roadside to sell the fish … It is a great ordeal.

Officer — Yes, everything will be done … Please send Machhua to our office. We shall send our expert to advise you on all aspects … Now I shall leave … I have to go to some other places too.

Baba — OK … Please, thanks … Machhua, go and see off the *Saheb* … Let us also go.

Enter Nat and Nati, singing and dancing. They refer to the coming and going of officers who tell the farmers about the schemes and the techniques of fish culture.

Tena	Nandu Bhaiya, Wh … a … t … is t … h … i … s … s … c … h … eme?
Jitu	The same thing that you plan when you wish to pilfer cucumber from Magru's fields!
Tena	Wh … at Jitu Bhai … ya … ? Wh … at is this ex … pert?
Jitu	Keep quiet! … Have I taken the responsibility to tell you everything?
Raghua	Look, Jitu … You are the most well-read man in the village … When he is asking you something, why don't you tell him?
Jitu	Oh! Poor man! … You call him a stammerer ten times in a day … Now you are recommending him.
Raghua	If you know … tell him … otherwise forget it!
Jitu	Yes, I don't know … Is it necessary that I should explain everything?
Baba	Why do keep arguing on small things? Sit together and discuss rather than quarrel all the time … This young blood!
Kaku	Yes, come on … sit down … Today Machhua has gone to bring the *saheb* and should be coming now.

Jitu What will be the outcome of his visit? … He would give a lecture but not money.

Nandu Is it only money that is everything, Jitu?

Jitu So, will it be enough with the lecture alone? … Follow these techniques for fish culture … fertilize in so many days … apply medicine in so many days … If you do this, the seed will grow fast … Culture of such and such varieties of fish is more profitable … and all that … Who does not know all that?

Kaku Listen … we do not know the new developments.

Raghua This is true … All the fishermen do not get to know the information on new developments, but Jitu is also right … Will we be benefited by the information alone without the capital? … The government is not taking any steps in this direction.

Baba What, Raghua … loan is available!

Jitu Is it so easy to obtain a loan? … You have to make repeated visits.

Nandu Why don't you ask me? … In anticipation of getting the loan in time, I ventured to borrow the money from the lender and purchased the seed as well as made all other arrangements, but what happened?

Jitu Leave it, Nandu … Everybody knows about it.

Tena I d … d … on't kn … kn … know.

Jitu He kept visiting the bank, fisheries office and so many other places for four months and by the time he got the loan, the amount to be paid to the moneylender had increased threefold, Tena … The loan that was received from the bank was simply paid to the lender and after the sale of the crop, he paid the rest of the money to all others from whom he had borrowed.

Kaku This is a matter of chance.

Raghua It is not chance, Kaku … It is a case of irresponsibility … If he had the loan on time where was the need for him to borrow from the moneylender? … What did he get after the running about? … All that he earned was the fish that he consumed … He had perforce to indulge in other activities to run the family expenses.

Tena L … Look … Th … There … Ma … Ma .. Machhua!

Raghua Oh, leave it … We know … Please come, *Pranam* [respectful address] *Saheb.*

Machhua enters with the technical officer (T Officer). Everybody gets up and welcomes him. Baba leaves the seat for the officer and sits on the floor.

T Officer *Vanakkam* [form of greeting in Tamil Nadu where the officer belongs to, equivalent of the north Indian *Pranam*]

Tena *Va … Va … Vanakkam*

T Officer I have wished you all.

Everyone wishes him again, as the form of greeting used by him was unknown to these people.

T Officer You know, I am a technical officer … Whatever you will ask me … I would tell you.

Machhua What should we ask you, sir? … Please tell us how can we have a good business of fish that would provide employment to all the people in this village.

T Officer Oh, you mean fish business and employment? … You see … I am a technical man … I can tell you how to do fish culture … how to increase fish production … Business is not my part! … But you know I have traveled a lot and I suggest you one thing … Why don't you make a Self-Help Group?

Raghua What did you say, sir? … What group?

T Officer You know … Cooperate with each other to help yourselves.

Baba That's what I have been telling these people … Now that Machhua has already broached the subject and everyone is present here … so, my children … Join and work together from now on.

T Officer Yes … father is right … If you will help yourselves, then God will also help you.

Nandu This means that we should invest our own money … collect a small amount from each one to have some capital?

Raghua That can be done, Nandu … but where will you bring the pond from? … Who will give the pond to us for fish culture? … Please tell us, sir.

T Officer You know … I can't tell you anything in this regard … This is government's jurisdiction … If you apply to the government then it may consider … You know government can give you a pond.

Jitu Sir, why don't you get us a pond for ten years? … Then see what we can do.

T. Officer No, no, no … You know I can't do anything … You organize a Self-Help Group and then apply to the government … I have noted such a case in another place … You know … model village … Oh, how beautiful!

Enter Nat and Nati, dancing and singing. The fishermen and technical officer watch silently.

Nat and Nati We have seen a beautiful village … What a nice place for the fishermen to live!

Nat They live together, they die together.

Nati They help themselves.

Nat and Nati They live together, they die together … they help themselves … They have made for themselves … Oh … Oh … they have made for themselves.

Nat A place to live under one roof.

Nat and Nati	We have seen a beautiful village … How beautiful a place for the fishermen to live.
Nati	Oh, my lord, what is this *chaun*? … that you have incorporated in the song?
Nat	Oh *Bawri* … listen … desire … come and get … This is *chaun*.
Nati	Oh … What's this hanky-panky that you are telling? … The audience are getting bored … If you continue like this, they will start throwing rotten tomatoes on you!
Nat	Look here, Nati … Do you know that village? … There the fishermen get all kinds of facilities in one house … under one roof … understand?
Nati	Do you mean to say that I don't know that? … You know … there they get not only the loan but even fish seed, feed and medicines under one roof … along with necessary information too on all aspects of fish culture … That's why!
Nat	Yes … that's why it is.
Nat and Nati	Such a beautiful village … such a beautiful village … A beautiful place for the fishermen to live!
Nati	Where they raise a lot of fish!
Nat	And live together … and live happily.
Nat and Nati	They don't have any problems … Oh … Oh … There is no quarrel and bickering between them.
Nat and Nati	We have seen a beautiful village … A nice place for the fishermen to live!

Exit Nat and Nati. The fishermen and technical officer resume their discussions.

T Officer Oh … such a model village … It must be seen!

Machhua Can we also do like this, sir?

T Officer You know … a man can do anything if he wants … man wanted, he reached the moon … If you will want, you will be able to produce a lot of fish … You know … the entire life will change … If you will ask me, then I will provide you all the technical support.

Jitu That's all OK, sir … But, if per chance, the fish that is harvested is not sold and rots away then … in one single instance, all the business will be over.

T Officer Oh yes … Insurance … the fish is insured also in that village … if you do that, your business will be safe, you know.

Machhua But who will do that for us, sir?

T Officer I can't do it … only government … only when the government will have a policy … You know … it is possible if you demand it.

Nandu Oh my God! … So many things … Who is going to tell us all that every day?

Baba My sons, you must understand all this … Try to understand.

Tena Un … Un … Under … s … s … stand what? F … First Eng … lish and … then … Sir's pronunciations!

Baba Listen, my sons … first decide that you would help yourselves … Then meet and elect your representative … It will be he who would tell you everything.

Machhua I would suggest that we should elect Jitu and start this work from now itself.

T Officer Oh good, it's alright … If you elect a man, I will give him all types of technical knowledge … He will be fully trained … then you will have good business.

Raghua Then we elect Jitu for this purpose right now … What, brothers? … What have you to say?

All Yes … yes … fine indeed.

T Officer Oh … how nice! … Then I go now … You know … you all will work well now … You know that proverb, "If there is a will, there is a way"?

Tena Wha … wha … what did you s … s … say, sir?

Jitu Tena … this means … if you want something, then you have a way to get it.

All Yes, yes … we understand now.

All turn quiet. Enter Nat and Nati.

Nat and Nati	It has started … started … started … the vehicle of this village has started … Ready to help themselves … after electing a *jankar* … it has started moving … It has started, started, started … the vehicle of this village has started.
Nati	So, my lord, the story of this village is over.
Nat	Yes, the fishermen are now aware of how to progress?
Nati	So, we go then.
Nat	Yes, we go.
Nat and Nati	So, ladies and gentlemen … you have seen our drama … many, many thanks!
Nati	Oh my lord … one minute … just look to that side.
Nat	Oh! Machali Rani (Queen Fish)!

Enter Queen Fish, dancing and singing.

I am the fish – Queen of water
I live in my own style
I live with those
Who help themselves
I am the fish – Queen of water
Oh, my dear fishermen
You also come and join us
I am the fish – Queen of water

The End